झारखण्ड GK/GS तथ्यावलोकन

पाठ्यक्रम के अनुरूप

झारखण्ड लोक सेवा आयोग में पूछे जाने वाले प्रश्न-पत्रों के अनुरूप बिंदुवार व सारगर्भित अध्ययन सामग्री विगत वर्षों के हल प्रश्न-पत्र के साथ झारखंड में आयोजित होने वाले समस्त प्रतियोगी/परीक्षाओं हेतु परीक्षार्थियों के लिए अपरिहार्य रूप से उपयोगी पुस्तक

संपादक
एन. एन. ओझा
(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन व लेखन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)
लेखन एवं प्रस्तुति
क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

अनुक्रमणिका

- **झारखण्ड का सामान्य परिचय.....1-3**

A. झारखण्ड का इतिहास.....4-7

(क) मुण्डा शासन व्यवस्था..... 4
(ख) नागवंशी शासन व्यवस्था..... 4
(ग) पड़हा पंचायत शासन व्यवस्था..... 5
(घ) मांझी परगना शासन व्यवस्था..... 5
(ङ) मुण्डा मानकी शासन व्यवस्था..... 6
(च) ढोकलो सोहोर शासन व्यवस्था..... 7
(छ) जातीय पंचायत शासन व्यवस्था..... 7

B. झारखण्ड आंदोलन.....8-48

(क) झारखंड के सदान..... 8
(ख) झारखण्ड के आदिवासी..... 8
(ग) स्वतंत्रता सेनानी एवं प्रमुख विभूति..... 22
(घ) झारंखण्ड आंदोलन एवं राज्य गठन..... 32
(ड) झारखण्ड राज्य निर्माण आंदोलन..... 41

C. झारखण्ड की विशिष्ट पहचान.....49-61

(क) सामाजिक स्थिति..... 49
(ख) झारखण्ड की सांस्कृतिक स्थिति 50
(ग) झारखण्ड की राजनीतिक स्थिति..... 55
(घ) झारखड की धार्मिक विशिष्टता एवं पहचान..... 60

D. झारखण्ड का लोक साहित्य नृत्य संगीत काव्य दर्शनीय स्थल एवं आदिवासी संस्कृति.....62-76

(क) लोक साहित्य..... 62
(ख) पारम्परिक कला एवं लोकनृत्य..... 64
(ग) लोक संगीत एवं वाद्य..... 70
(घ) झारखड के दर्शनीय स्थल..... 71

E. झारखण्डी साहित्य और साहित्यकार.....77-79

F. प्रमुख शिक्षण संस्थान.....80-83

G. झारखण्ड के खेलकूद.....84-86

H. झारखंड के भूमि संबंधी कानून/अधिनियम.....87-107

(क) छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम या छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट - 1908..... 87
(ख) संथाल परगना काश्तकारी (अनुपूरक उपबंध) अधिनियम, 1949..... 98

I. 1947 से राज्य में आर्थिक विकास का इतिहास 108-118

(क) झारखंड का भूगोल..... 108
(ख) अपवाह प्रणाली..... 111
(ग) खान एवं खनिज..... 114

J. झारखण्ड की औद्योगिक नीति, विस्थापन और पुनर्वास नीति.....119-124

K. झारखण्ड के प्रमुख उद्योग का नाम और स्थान तथा औद्योगिक विकास.....125-128

L. झारखण्ड की प्रमुख योजनाएं एवं उपयोजनाएं.....129-149

रोजगार सृजन संबंधी योजना..... 129
सामाजिक कल्याण से संबंधित योजना 130
युवा विकास से संबंधित योजना..... 136
ग्रामीण विकास से संबंधित योजना 138
स्वास्थ्य संबंधी योजना..... 140
कृषि संबंधी योजना..... 141
महिला/बाल विकास संबंधी योजना..... 143
प्रमुख नीतियां..... 146
अन्य प्रमुख योजना..... 147

M. झारखण्ड में जंगल प्रबंधन एवं वन्य जीव-जन्तु संरक्षण कार्य.....150-153

N. झारखण्ड राज्य के पर्यावरण संबंधित तथ्य.....154-156

O. झारखण्ड में आपदा प्रबंधन.....157-161

P. झारखण्ड से संबंधित विविध तथ्य.....162-167

Q. विगत वर्षों के हल प्रश्न-पत्र.....168-260

❖◆❖◆❖

पुस्तक के संबंध में

यह पुस्तक झारखण्ड लोक सेवा आयोग द्वारा संशोधित नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है। पुस्तक मुख्य रूप से सामान्य अध्ययन के प्रश्न-पत्र-2 के पाठ्यक्रम खंड A से P पर आधारित है।

पुस्तक की सामग्रियों का संकलन न सिर्फ द्वितीय प्रश्न-पत्र के अनुरूप किया गया है; बल्कि इसे प्रारंभिक परीक्षा के प्रथम प्रश्न-पत्र में झारखण्ड से संबंधित पूछे जाने वाले प्रश्नों के साथ-साथ मुख्य परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रकार के पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति के अनुरूप भी प्रस्तुत किया गया है, जो सम्पूर्णता में परीक्षाथियों के लिए उपयोगी साबित होगी।

पुस्तक में पाठ्यक्रम से संबंधित तथ्यों को बिन्दुवार, सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस सामग्री के माध्यम से परीक्षार्थी प्रारंभिक परीक्षा में पूछे जाने वाले शत-प्रतिशत प्रश्नों का उत्तर दे पाएंगे।

पुस्तक में झारखण्ड लोक सेवा आयोग द्वारा पूर्व में आयोजित समस्त प्रारंभिक परीक्षाओं के विगत वर्षों के हल प्रश्न-पत्र को पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यायवार रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रश्नों की व्याख्या विस्तार से की गई है, जिसका उद्देश्य परीक्षार्थियों को हल प्रश्न-पत्रों के माध्यम से भविष्य में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर से तथा प्रश्नों की प्रकृति से अवगत कराना है।

इस पुस्तक में करेंट अफेयर्स से संबंधित सामग्रियों को प्रस्तुत नहीं किया गया है। परीक्षार्थी झारखण्ड राज्य से संबंधित करेंट अफेयर्स व् राष्ट्रीय स्तर से घटनाक्रम के सामग्रियों के अध्ययन के लिए **झारखण्ड समसामयिकी तीव्र अवलोकन** पुस्तक का अध्ययन करें, जो झारखण्ड लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जाने वाली प्रारंभिक परीक्षा की परीक्षा तिथि से एक माह पूर्व या वार्षिक रूप से क्रॉनिकल प्रकाशन से प्रकाशित होती है।

आशा है कि झारखण्ड लोक सेवा आयोग सिविल सेवा परीक्षा के नवीनतम संशोधित पाठ्यक्रम के अनुरूप संपूर्णता पर आधारित यह पुस्तक छात्रों के लिए एक सफल मार्गदर्शक साबित होगी।

संपादक

I
अध्याय

झारखंड का सामान्य परिचय

- राज्य का अक्षांशीय विस्तार – **21°58'10" उत्तरी अक्षांश से 25°18'15" उत्तरी अक्षांश।**
- राज्य का देशांतरीय विस्तार – **83°19'50" पूर्वी देशांतर से 87°57'00" पूर्वी देशांतर के मध्य विस्तृत है।**
- राज्य का कुल क्षेत्रफल – **79,714 वर्ग कि.मी. है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 2.42 प्रतिशत है।**
- राज्य की लम्बाई (उत्तर से दक्षिण) – **380 कि.मी.**
- राज्य के चौड़ाई (पूर्व से पश्चिम) – **463 कि.मी.**
- झारखण्ड में जिलों की संख्या –**24**
- झारखण्ड में प्रमण्डलों की संख्या –**5**
  1. पलामू प्रमण्डल –गढ़वा, पलामू, लातेहार।
  2. उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल –चतरा, हजारीबाग, गिरिडीह, कोडरमा, धनबाद, बोकारो, रामगढ़।
  3. दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल –रांची, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, खूंटी।
  4. कोल्हान प्रमंडल –पश्चिम सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम, सरायकेला खरसावां।
  5. संथाल परगना प्रमंडल –देवघर, जामताड़ा, दुमका, गोड्डा, पाकुड़, साहेबगंज।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा प्रमंडल तथा सबसे छोटा प्रमंडल पलामू है। –उत्तरी छोटानागपुर
- उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के अंतर्गत सर्वाधिक 7 जिले तथा पलामू प्रमंडल के अंतर्गत सबसे कम 3 जिले आते हैं।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से झारखण्ड का सबसे बड़ा जिला पश्चिमी सिंहभूम तथा सबसे छोटा जिला रामगढ़ है।
- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला रांची तथा सबसे छोटा जिला लोहरदगा है।
- जनसंख्या के दृष्टि से सबसे बड़ा प्रमंडल छोटानागपुर तथा सबसे छोटा प्रमंडल पलामू है।
- झारखण्ड में अनुमंडलों की संख्या है –**45**
- झारखण्ड में प्रखण्डों की संख्या है –**260**
- झारखण्ड की भौगोलिक अवस्थिति –**भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में**
- झारखण्ड स्थित है –**उत्तरी गोलार्द्ध में**
- झारखण्ड का ज्यामितीय आकार –**चतुर्भुजाकार है**
- झारखंड की जलवायु है –**उष्ण कटिबंधीय मानसूनी**
- राज्य से कर्क रेखा गुजरती है। –**23.5° उत्तरी अक्षांश**
- प्रांत की सीमाएं एवं विस्तार–उत्तर में बिहार, दक्षिण में ओडिशा,
  पूर्व में बंगाल तथा पश्चिम में छत्तीसगढ़ एवं उत्तर प्रदेश
- राज्य की राजधानी –**रांची**
- राज्य की उपराजधानी –**दुमका**
- औद्योगिक राजधानी –**जमशेदपुर**
- उच्च न्यायालय –**रांची**
- राजकीय भाषा –**हिन्दी**
- द्वितीयक भाषा –**उर्दू, संथाली, मुण्डारी, हो, खड़िया, कुडुख, कुरमाली, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया, बांग्ला, उड़िया, मैथिली, अंगिका, भोजपुरी एवं मगही**
- राजकीय पशु –**हाथी**
- राजकीय पक्षी –**कोयल**
- राजकीय वृक्ष –**साल**
- राजकीय फूल –**पलाश**
- राजकीय प्रतीक –**अशोक स्तंभ के साथ-साथ वृत्ताकार खंडों के बीच 24 हाथी, 24 पलाश के फूल, सौर चित्रकारी के 48 नर्तक तथा अंतिम चक्र में 60 सफेद वृत्त**
- राजकीय दिवस –**15 नवंबर (बिरसा मुंडा का जन्मदिन)**
- अधिसूचित प्रखण्डों की संख्या –**132**
- गांवों की संख्या –**32,615**
- पंचायतों की संख्या –**4,423**
- जिला परिषदों की संख्या –**24**
- जिला परिषदों के सदस्यों की संख्या –**445**
- क्षेत्रफल की दृष्टि से झारखण्ड का स्थान –**15वां**
- जनसंख्या की दृष्टि से झारखण्ड का स्थान –**14वां**
- कुल कृषि योग्य भूमि –**38 लाख हेक्टेयर**
- शुद्ध बोया गया क्षेत्र –**18.07 लाख हेक्टेयर**
- कुल सिंचित भूमि –**1.95 लाख हेक्टेयर**
- झारखण्ड की मुख्य फसल –**धान**
- राज्य का सर्वोच्च शिखर –**पारसनाथ (1365 मीटर)**
- राज्य का द्वितीय सर्वोच्च शिखर –**सरूअत पहाड़ी**
- राज्य की विधायिका –**एक सदनीय (विधानसभा)**
- विधानसभा सदस्यों की संख्या –**82 (81+1)**
- विधानसभा में आरक्षण की स्थिति –**Gen. - 44, SC - 9, ST - 28**
- लोकसभा सदस्यों की संख्या –**14**
- लोकसभा में आरक्षण की स्थिति–**Gen. - 8, SC - 1, ST - 5**
- राज्यसभा सदस्यों की संख्या –**06**
- SC के लिए एकमात्र सुरक्षित सीट –**पलामू**
- सबसे बड़ा संसदीय क्षेत्र –**पश्चिमी सिंहभूम (सुरक्षित ST)**
- सबसे छोटा संसदीय क्षेत्र –**चतरा**
- प्रथम राज्यपाल –**प्रभात कुमार**
- प्रथम मुख्यमंत्री –**बाबूलाल मरांडी**
- प्रथम विधानसभा अध्यक्ष –**इन्दर कुमार नामधारी**

A
अध्याय

झारखण्ड का इतिहास

(क) मुण्डा शासन व्यवस्था

बिरसा मुण्डा 21,000 मुण्डाओं के साथ **'सोना लेकर दिसुम'** अर्थात सुनहले देश की खोज में झारखण्ड आया था। मुण्डाओं ने कृषि के लिए जंगलों को साफ किया, जिसे **'खूटकट्टी'** कहा गया, उस जमीन के मालिक को **'सूत-कट्टीदार'** कहते हैं।

- मुण्डा गणतंत्र के पोषक थे, उनके ग्राम पंचायत को **'पड़हा पंचायत'** कहा जाता था, जिसमें गांव के बड़े-बूढ़े भी रहते थे। इसी पड़हा पंचायत द्वारा मुण्डा गांव संचालित एवं नियंत्रित किए जाते थे। पड़हा पंचायत का गठन **5 से 21 गांवों** को मिलाकर किया जाता है।
- पड़हा पंचायत प्रमुख को **'हातु मुण्डा'** कहा जाता है। हातु का अर्थ **'गांव'** होता है।
- धार्मिक अनुष्ठानों, पर्व-त्योहार तथा शादी विवाह में **'पाहन'** की भूमिका प्रमुख होती थी। पाहन पुजारी को कहा जाता है।
- हातु पंचायत से **बड़ा** पंचायत पड़हा पंचायत होता है। पड़हा पंचायत के सर्वोच्च अधिकारी को **'पड़हा राजा'** कहा जाता है। यह व्यवस्था **गोत्र** पर आधारित थी। **'अखरा'** जहां पंचायत की बैठक होती थी, यह सांस्कृतिक केंद्र भी होता है।
- पड़हा राजा के सहयोग के लिए कुछ अन्य अधिकारी जैसे- दीवान, कोतवाल, पाण्डे, लाल, दरोगा एवं कर्ता होते है। **'पड़हा राजा'** को सर्वोच्च न्यायालय, कार्यपालिका और विधायिका माना जाता है। उनका निर्णय सभी को मान्य होता है। पड़हा के राजा को **'मानकी'** भी कहते हैं।
- मुण्डाओं के शासन व्यवस्था पड़हा पंचायत या हातु पंचायत में **'महिलाओं'** का स्थान नहीं था।
- मुण्डाओं की प्रशासनिक व्यवस्था खूंट कट्टीदार व्यवस्था थी, जिसमें प्रत्येक खूंट अपने जंगल-जमीन का मालिक होता है तथा इसके आस-पास बसे गांवों को मिलाकर 'पड़हा' नामक पंचायत बनाया गया। पड़हा का मुखिया मुंडा होता है तथा कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर एक पट्टी बनाया जाता है जिसका प्रधान मानकी होता है। कई पट्टी को मिलाकर पड़हा का निर्माण होता है, जिसका प्रमुख 'पड़हा राजा' होता है।
- इस पंचायत में दीवान, ठाकुर, पांडे-कर्मा, लाल नामक पांच अधिकारी होते हैं।

(ख) नागवंशी शासन व्यवस्था

इनके राजा का चुनाव मनोनयन से होता था (वंशानुगत रूप से नहीं) इसके प्रथम राजा फणिमुकुट राय थे, जिन्होंने पड़हा शासन व्यवस्था को समाप्त नहीं किया।

- नागवंशी शासक रैयतों से मालगुजारी नहीं लेते थे, इसलिए नागवंशी राजाओं द्वारा मुगलों को मालगुजारी देना मुश्किल था, अतः 1616 में छोटानागपुर खास के राजा दुर्जनशाल को कैद कर जहांगीर ने 12 वर्षों तक ग्वालियर के किले में रखा।
- **'सुतियाम्बे'** के महाराज मदरा मुण्डा के शासन काल 64 ई. में तालाब के किनारे नागफण के नीचे एक बालक मिला, राजा ने इस बालक का नाम **'फणि मुकुट'** रखा और उसका लालन-पालन रानी द्वारा अपने बड़े बेटे मणि मुकुट के साथ किया।
- सन् 83 ई. में **फणि मुकुट राय महाराजा** बने और **नागवंश शासन की नींव रखीं।** मदरा मुण्डा का उत्तराधिकारी **'मणि कुकुट'**, फणि मुकुट का **दीवान** बना। नागवंशी लोग मुण्डाओं को अपना **बड़ा भाई मानते** आ रहे हैं।
- मदरा मुंडा की शासन व्यवस्था **'मदरा पांजी'** के नाम से जानी जाती है।
- नागवंशी शासकों का जीवन सादगीपूर्ण था ये मिट्टी-खपड़े के घर में रहते थे। नागवंशी शासन काल में खेती करने की छूट थी। इस पर कोई **'लगान'** नहीं लगता था। लगान की व्यवस्था नागवंशी शासनकाल में नहीं थी।
- **डॉ. बी.पी. केशरी** ने अपनी पुस्तक **'छोटानागपुर का इतिहास'** में नागवंशी शासन व्यवस्था के कई पदों एवं ओहदों के बारे में बताया है।
- **महतो** गांव के प्रमुख या महत्तम व्यक्ति को कहा जाता था। **भण्डारी** राजा के गांव में एक पद होता था, जो राजा की खेती- बाड़ी करता और अन्न भण्डार का काम करता था। कुछ अन्य सहायक पद जैसे पांडे, अमीन, पोद्दार, साहनी, बड़ाईक, विरीतिया, घटवार, झलाकादार, दिगवार, कोटवार, गोड़ाइत, जमादार, ओहदार, तोपची, बारकंदान, बक्शी, चोबदार, बराहिल, चौधरी एवं गौंझू आदि ये सभी स्थानीय स्तर पर नागवंशी के सहायक होते थे।
- नागवंशी शासन का प्रमुख **'महाराजा'** होता था, उसके बाद **कुंवर**, **लाल** और **ठाकुर** आदि होते थे। लाल एवं ठाकुर **'राजपरिवार'** के ही सदस्य होते थे। इन्हें निश्चित इलाका दे दिया जाता था; जैसे **जरियागढ़** का राजा ठाकुर महेन्द्र नाथ शाहदेव, बड़कागढ़ के राजा ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव एवं बसारगढ़ के राजा ठाकुर योगेंद्र नाथ शाहदेव थे।
- 12 अगस्त, 1765 ई. को मुगल शासक **'शाहआलम द्वितीय'** ने यह क्षेत्र **ईस्ट इंडिया कंपनी** को दे दिया।
- प्रशासनिक इकाई **'परगनादारी'** में परिणत होती गई।

B
अध्याय

झारखण्ड आंदोलन

(क) झारखंड के सदान

झारखण्ड में समान्यत: **गैर-जनजातियों को सदान** कहा जाता है, किन्तु ऐसा है नहीं, सभी गैर-जनजातियां सदान नहीं हैं। वास्तव में ये सदान झारखंड के मूल गौर जनजाति लोग हैं।

- सदान मुख्य रूप से खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया एवं कुरमाली भाषाएं बोलते हैं।
- प्रजातीय दृष्टि से सदान '**आर्य**' माने जाते हैं, हालांकि कुछ सदान '**द्रविड़**' एवं '**आग्नेय**' कुल के भी हैं।
- सदान **जैन, वैष्णव**, **मुस्लिम** एवं **ईसाई** धर्म के अनुयायी भी होते हैं। सदानों में **पीतल** और **कांसे** का बर्तन रखना '**समृद्धि**' का द्योतक माना जाता है।
- सदान महिलाओं में प्रचलित आभूषण **पोला, साखा, कंगन, बिछिया, पईरी, छूछी, बुलाक, बेसर, तरकी, पटवासी एवं खोंगसो है**।
- सदानों में आदिवासियों की तरह '**गोदना**' का भी प्रचलन है। सदान बहन के पति को **बहनोई** या **भाटु** कहते हैं।
- सदानों के गांवों की पहचान '**अखरा**' से होती है। सदानों में 'जावा जगाने' के लिए **प्रति रात** नृत्य भी होते हैं।
- महिलाएं शादी विवाह एवं अन्य अवसर पर नृत्य करती हैं। **डमकच, झूमटा, झूमर** आदि **सदानों का सामूहिक नृत्य** है।
- सदानों के गीत **कई प्रकार के** होते हैं, जिसके **राग भी** उन्हीं के नाम **अथवा सुर** के **नाम पर नामित होते** हैं।
- सदानों के कुछ प्रमुख गीतों के प्रकार हैं- **डमकच, झुमटा, अंगनाई या जनानी झूमर, सोहर, विवाह गीत, मरदानी झूमर, फगुआ रंग, पावस उदासी** एवं **सोहराय** आदि।

सदान की अवधारणा

झारखण्ड में ऐसे समूह जो गैर-जनजातियों से संबंध रखते हैं परंतु अपने आप को मूलवासी मानते हैं वे सदान कहलाते हैं।

- शाब्दिक रूप से सदान का अर्थ है बैठे हुए या बसे हुए लोगों का समूह, जो प्रजातीय दृष्टि से आर्य तथा धार्मिक दृष्टि से हिन्दू माने जाते हैं। (कुछ ऑस्ट्रिक भी माने जाते हैं) ये अपने-आप को सदपरेवा अर्थात् घर में बसने वाला कबूतर तथा बनवासियों/आदिवासी को वनया कबूतर कहते हैं।

सदानों की भाषा

सामान्यत: यह माना जाता है कि ऐसे गैर-जनजातीय व्यक्ति जिनकी भाषा मौलिक रूप में खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया तथा कुरमाली है वहीं सदान माने जाते हैं।

सदानों की सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था

सदानों का समाज पितृसत्तात्मक है तथा इनमें मातृ-पितृ कुल में वैवाहिक संबंध वर्जित है।

- ये मुख्य रूप से सोहराय, जितिया, करमा, सरहुल, मकर संक्रांति, टूसू पर्व मनाते हैं।

सदानों का धर्म

धार्मिक रूप से ये प्राचीन हिन्दू हैं, परंतु इस्लाम के आगमन के पश्चात् जो यहां बस गए वे भी कालांतर में सदान कहलाए तथा सबकी अपनी-अपनी धार्मिक आस्थाएं एवं परम्पराएं हैं।

- सदानों में सराक जाति जैन धर्मावलम्बी है, जो सूर्य एवं मनसा के उपासक हैं तथा वे मांस-मछली नहीं खाने के साथ-साथ सूर्यास्त के पश्चात् भोजन भी नहीं करते हैं। कुछ सदान वैष्णव उपासक भी हैं।
- **सदान वस्तुत:** हिन्दू, जैन, इस्लाम, बौद्ध आदि सभी धर्मों के मानने वाले होते हैं।
- सदान सामाजिक/सामुदायिक जबकि आदिवासी कबिलाई घूमन्तू समूह वाले होते हैं। सदानों में बडाईक, देसावली, धनुक, घासी, भुईयां, ब्राह्मण, राजपूत, तेली, माली, कुम्हार जैसी जातियां शामिल हैं।

(ख) झारखण्ड के आदिवासी

सामान्य परिचय

झारखण्ड एक आदिवासी बहुल राज्य है तथा 2011 की जनगणना के अनुसार इस राज्य में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 86,45,042 है, जो राज्य की कुल जनसंख्या का 26.2% है।

- **सामान्यत:** वैसे लोग जो प्राकृतिक वातावरण में जीवन-यापन करते हैं तथा एक विशिष्ट जीवन पद्धति, भाषा, संस्कार का पालन करते हैं एवं उसे अक्षुण्ण रखते हुए आधुनिक सभ्यता से अलगाव रखते हैं, आदिवासी या जनजाति कहलाते हैं।

जनजातियों का वर्गीकरण

प्रजातीय समूह के आधार पर झारखण्ड की जनजातियों को तीन प्रमुख प्रजातियों में विभाजित किया जा सकता है-

1. प्रोटो आस्ट्रोलायड
2. आस्ट्रोलायड या प्री द्रविडियन
3. द्रविडियन

C
अध्याय

झारखण्ड की विशिष्ट पहचान

(क) सामाजिक स्थिति

झारखण्ड एक जनजातीय राज्य है। **15 नवम्बर, 2000 ई.** को यह प्रदेश भारत का **28वां राज्य बना। जनजातियों की जनसंख्या के आधार पर राज्य का देश में छठा स्थान है।** सभी जनजातियों की अपनी **संस्कृति, वेश, भाषा, पर्व** और **त्योहार हैं।**

झारखण्ड में जनसंख्या के आधार पर **संथाल, उरांव एवं मुंडा** जनजातियों का स्थान क्रमशः पहला, दूसरा एवं तीसरा है।

- झारखण्ड प्रदेश विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों एवं धर्मों का संगम क्षेत्र कहा जा सकता है। **द्रविड़, आर्य एवं ऑस्ट्रो-एशियाई भाषाएं** यहां बोली जाती हैं। **हिंदी, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुरमाली** यहां की प्रमुख भाषाएं हैं।
- इसके अलावा यहां **कुडुख, संथाली, मुंडारी** एवं **हो भाषाएं भी बोली जाती हैं।** प्रदेश में बसनेवाले स्थानीय आर्य भाषी लोगों को **'सदान'** कहा जाता है। झारखण्ड की कुल आबादी 2011 के जनगणना के आधार पर **3.29 करोड़** है, जिसमें जनजातियों की कुल जनसंख्या 86,45,042 अर्थात **26.2%** है। राज्य में **32 प्रकार की जनजातियां** निवास करती हैं, **जिनमें से 9 आदिम जनजातियां हैं** (बिरहोर, कोरवा, असुर, परहिया, बिरजिया, सौरिया, पहाड़िया, माल पहाड़िया, सबर एवं हिल खड़िया)।
- **1872 में सर्वप्रथम 18 जनजातियों** को अनुसूचित श्रेणी में सूचीबद्ध किया गया। **1931 में 26, 1941 में 29, 1956 में 30** एवं **जून 2003 में 32** जनजातियां अनुसूचित श्रेणी में **आयीं और अभी** सदान समुदाय की अनेक **जातियां संस्कृति** एवं **इतिहास के आधार** पर अनुसूचित श्रेणी में प्रतीक्षारत हैं।

सामाजिक जीवन

- जनजाति समाज की जीवन शैली के अध्ययन से विदित होता है कि मानव **सभ्यता-संस्कृति** का विकास कैसे हुआ है। इनके जीवन जीने की **कला अद्‌भुत है।** इनकी संस्कृति में **सामाजिक, समरसता, शोषणमुक्त सामाजिक व्यवस्था, समानता, श्रम के प्रति निष्ठा, नृत्य-संगीत** के प्रति **असीम लगाव** है।
- ये स्वभाव से **स्वतंत्रता प्रिय, ईमानदार, कठोर एवं मेहनती** होते हैं। पारम्परिक रूप से ये जो **करते थे आज** भी करते आ रहे हैं, जो **सोच थी** वह लगभग अभी भी वैसी ही है। परंतु **शिक्षा एवं शहरीकरण** का प्रभाव थोड़ा बहुत देखने को मिल रहा है। फिर भी इनकी संस्कृति, भाषा अक्षुण्ण बनी हुई है।

निवास स्थान

- आज भी जनजाति गांव जंगलों के मध्य, पहाड़ों एवं नदी किनारे बसे हुए हैं। गांव के मध्य **आखरा** देखा जा सकता है, जो समस्त **सांस्कृतिक गतिविधियों,** पर्व-त्योहार तथा पंचायत बैठक का स्थान होता है।
- आखरा से लगे **उनका युवागृह धुमकुरिया, गितिओडा आदि** युवक-युवतियों के लिए अलग-अलग बना होता है, जो अब लगभग **विलुप्त होने के** कगार पर है।
- जब एक गांव आबादी के हिसाब से भर जाता था तब **वे वैसे ही जंगल** या किसी **अन्य** स्थान का चुनाव करते हैं जहां **उन्हें कृषि के** लिए भूमि एवं जल की उपलब्धता हो।
- **नए गांव बसाने पर ये लोहार, कुम्हार, तुरी आदि सदान जातियों को 'दोना' और 'कोना'** देकर **आमंत्रित करते एवं बसाते थे।** जिससे इनकी **दैनिक जरूरतों की** वस्तुएं सहजता से उपलब्ध हो सकें।
- कृषि के लिए बनायी गई जमीन पर किसी **प्रकार का लगान या कर नहीं देना** होता था क्योंकि **इनके शासक** शोषण मुक्त **शासन के पक्षधर थे। तब भूमि बनाने** की पूरी छूट थी।
- मुण्डा **खुटंकटी, उरांव, भुइंहरी, सदान, कोडकर** जमीन प्रायः **अपनी मेहनत से कृषि** के लिए बना लेते थे।

गोत्र व्यवस्था

संथालः ये प्रोटोआस्ट्रोलायड हैं तथा इनकी त्वचा का रंग काला, गहरे भूरे बाल, मोटी नाक चौड़ी तथा चपटी होती हैं।

- इनमें 12 पितृवंशीय व बर्हिविवाही गोत्र पाए जाते हैं; जैसे - हंसदा, मूरमू, किस्कू, हेम्ब्रम, मंडी आदि।
- इनके समाज को चार 'हडो' किस्कू हड (राजा), मूरमू हड (पुजारी), सोरेन हड (सिपाही) तथा मरूडी हड (कृषक) में बांटा गया है। इनकी विवाह पद्धति वापला कहलाती है तथा संथाल गांवों को 'आतो' तथा प्रधान को मांझी कहा जाता है।

उरांवः इनमें 14 गोत्र जिसे 'किली' कहा जाता है, पाए जाते हैं।; जिनमें लकड़ा, रूंडा, गारी, तिर्की, केरकेट्टा, कुजुर प्रमुख हैं।

- इनमें गोदना का काफी महत्व है तथा इनके समाज में विधवा विवाह एवं तलाक प्रथा का प्रचलन है।
- उरांवों का मुखिया महतो कहलाता है तथा उरांवो जनजाति की पंचायत 'पंचोरा' कहलाता है।
- 'हंडिया' इनका प्रमुख एवं प्रिय पेय पदार्थ है।

D
अध्याय

झारखण्ड का लोक साहित्य नृत्य संगीत काव्य दर्शनीय स्थल एवं आदिवासी संस्कृति

(क) लोक साहित्य

झारखण्डी साहित्य को हम तीन भागों में बांट कर समझने की कोशिश करेंगे-

झारखण्डी साहित्य

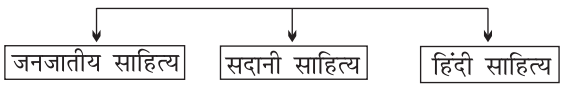

जनजातीय साहित्य

संथाली

- यह **संथाल जनजाति** की भाषा है।
- संथाल अपने भाषा को **होड़ रोड़ कहते** हैं।
- शुद्ध संथाली भाषा में **बंगाली, उड़िया, मैथिली** आदि का **मिश्रण** है। इनका अपना **व्याकरण** है।
- संथाली भाषा की लिपि को **'ओलचिकी'** कहते हैं। इसका आविष्कार **रघुनाथ मुर्मू ने 1941 में** किया था।
- **92वें** संविधान संशोधन **2003 में संथाली भाषा** को भारतीय संविधान की **8वीं अनुसूची में** शामिल किया गया।
- **'रेसेज एण्ड कल्चर्स ऑफ इंडिया' नामक पुस्तक में** संथाल जनजाति की जानकारी मिलती है। इसके लेखक **डी. एन. मजूमदार** हैं।
- संथाली भाषा के **प्रमुख रचनाकार** हैं- **जे फिलिप्स, इ जी मन्न, पकसुले, कैम्पबेल, मैकफेल, डोमन साहू समीर, केवल सोरेन**।

मुण्डारी

- **मुण्डा जनजाति की भाषा को मुण्डारी** कहते हैं, मुण्डारी भाषा के **चार रूप** मिलते हैं-

(i) **हसद मुण्डारी: खूंटी एवं मुरहू क्षेत्र के पूर्वी अंचलों** में बोली जाने वाली मुण्डारी।

(ii) **तमड़िया मुण्डारी: तमाड़ क्षेत्र के** आसपास बोली जाने वाली मुण्डारी।

(iii) **केर मुण्डारी: रांची के आस-पास बोली जाने** वाली मुण्डारी।

(iv) **नगुरी मुण्डारी: तोरपा, कर्रा, कोलेबीरा, बानो** आदि क्षेत्रों में बोली जाने वाली नागपुर भाषा मिश्रित मुण्डारी।

- **मुण्डारी साहित्य के प्रमुख रचनाकार-**
  - **जे.सी. व्हिटली, ए. नोट्रोट, एस.जे.डी. स्मेट, फादर हॉफमैन, ए.सी. राय, डब्ल्यू. जी. आर्चर, पी.के. मित्रा।**

हो

- हो जनजाति की **भाषा का नाम 'हो' ही है। इस भाषा की अपनी शब्दावली एवं उच्चारण पद्धति है।**
- **हो साहित्य के प्रमुख रचनाकार-**
  - **भीमराव सुलंकी, सी.एच. बोम्बास, लियोनल बरो, डब्ल्यू. जी. आर्चर।**

कुडुख/उरांव

- **उरांव जनजाति** की भाषा का नाम **कुडुख या उरांव है।** इस भाषा का लोक **साहित्य बहुत सम्पन्न** है।
- **प्रमुख रचनाकार-**
  - **ओ फ्लैक्स, फड्रिनेंड होन, ए ग्रीनर्ड।**

खड़िया

- **खड़िया जनजाति** की **भाषा का नाम खड़िया** है।
- इसकी लिखित साहित्य **विकासशील अवस्था** में है।
- **प्रमुख रचनाकार-**
  - **गगल चंद्र बनर्जी, एस.सी. राय, एच. फ्लोर, डब्ल्यू. जी. आर्चर।**

सदानी साहित्य

खोरठा

- इसका संबंध **प्राचीन खरेष्ठी लिपि** से जोड़ा जाता है।
- यह **मागधी-प्राकृत** से विकसित भाषा है।
- इस भाषा के अंतर्गत **रामगढ़िया, देसवाली, गोलवारी, खटाही, खंटाई एवं खोटटाही आदि बोलियां** आती हैं।
- खोरठा साहित्य में अधिकांशत: **राजा-रजवाड़ों राजकुमार-राजकुमारियों आदि की कथाएं मिलती हैं।**
- **प्रमुख रचनाकार-**
  - **भुनेश्वर दत्त शर्मा, श्रीनिवास पानुरी** आदि।

पंचपरगनिया

- **पंचपरगना** क्षेत्र की प्रचलित भाषा है, जिसके **अंतर्गत तमाड़, बुंडू, राहे, सोनाहातू एवं सिल्ली आते** हैं।
- इस भाषा के **क्षेत्र एवं परिवेश के प्रति सजगता एवं वैष्णव भक्ति का चित्रण** मिलता है।
- **प्रमुख रचनाकार**
  - **विनोदिया कवि, विनोद सिंह, गोरंगिया, सोबरन कवि, बरजू राम।**

अध्याय

विगत वर्षों के हल प्रश्न-पत्र

इतिहास

1. मुगलों के समय झारखण्ड का प्रदेश_____के नाम से जाना जाता था।

(a) कुकरा (b) आटवी
(c) आरण्या (d) वनांचल

J.P.S.C. 2021

उत्तर: (a), मुगल काल में झारखंड क्षेत्र कुकरा के नाम से जाना जाता था।

- बाबर हुमायूँ के कार्यकाल में झारखण्ड मुगल विरोधी अफगानों का आश्रय-स्थल था। इस समय मुगलों का सबसे बड़ा शत्रु अफगानी सरदार शेरशाह था।

2. अंग्रेजों का झारखण्ड में सर्वप्रथम प्रवेश_____की ओर से हुआ।

(a) पलामू (b) सिंहभूम
(c) पाकुड़ (d) चतरा

J.P.S.C. 2021

उत्तर: (a), झारखण्ड क्षेत्र में अंग्रेजों का प्रवेश सर्वप्रथम सिंहभूम की ओर से हुआ। 1780 ई. में ही ईस्ट इंडिया कंपनी का मिदनापुर पर कब्जा हो चुका था। उसी समय से अंग्रेज सिंहभूम सहित बंगाल के सीमा से लगे झारखण्ड के क्षेत्रों में अपनी शक्ति तथा प्रभाव के विस्तार की बात सोचने लगे थे। उस समय सिंहभूम के प्रमुख राज्यों में डालभूम (ढाल राजाओं का), पोरहाट (सिंह राजाओं का) तथा कोल्हान (हो लोगों का) आदि उल्लेखनीय हैं। विकल्प सही नहीं है।

3. भूमिज विद्रोह का नेता कौन था?

(a) गंगा नारायण (b) भगीरथ
(c) दुबिया गोसाईं (d) जतरा भगत

J.P.S.C. 2021

उत्तर: (a), भूमिज विद्रोह का आरंभ 1832 ईसवी में गंगा नारायण के नेतृत्व में हुआ। इसका प्रभाव बीरभूम और सिंहभूम के क्षेत्र में रहा।

- भूमिज विद्रोह की विधिवत शुरुआत 26 अप्रैल 1832 ईस्वी को वीरभूम परगाना के जमींदार के सौतेले भाई और दीवान माधव सिंह की हत्या के साथ हुई। यह हत्या गंगा नारायण सिंह के द्वारा की गई।
- 7 फरवरी 1833 को खरसावां के ठाकुर चेतन सिंह के खिलाफ लड़ते हुए गंगा नारायण मारा गया। खरसावां के ठाकुर ने उसका सर काटकर अंग्रेजी अधिकारी कैप्टन विलकिंग्सन के पास भेज दिया।

4. निम्न में से कौन-सा शास्त्रीय नृत्य अपने वर्तमान स्वरूप में मुगल परम्परा से प्रभावित है?

(a) भरतनाट्यम (b) कथकली
(c) कथक (d) संपत्ति कर

J.P.S.C. 2021

उत्तर: (c), कथक नृत्य मुगल परम्परा से प्रभावित है। कत्थक शब्द का उदभव कथा शब्द से हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है कथा कहना। यह नृत्य मुख्य रूप से उत्तरी भारत में किया जाता है। यह मुख्य रूप से एक मंदिर या गाँव का प्रदर्शन था जिसमें नर्तक प्राचीन ग्रंथों की कहानियाँ सुनाते थे। कथाकार या कहानी सुनाने वाले वह लोग होते हैं, जो प्राय: दंतकथाओं, पौराणिक कथाओं और महाकव्यों की उपकथाओं के विस्तृत आधार पर कहानियों का वर्णन करते हैं। यह एक मौखिक परंपरा के रूप में शुरू हुआ।

भारत में अन्य शास्त्रीय नृत्य

- तमिलनाडु – भरतनाट्यम
- कथकली – केरल
- कुचिपुड़ी – आंध्रप्रदेश
- ओडिसी – ओडिशा
- सत्रिया – असम
- मणिपुरी – मणिपुर
- मोहिनीअट्टम – केरल

5. निम्न में से कौन-सी शहरी जीवन की विशेषता नहीं है?

(a) अनौपचारिक संबंध (b) प्रतिस्पर्धा
(c) अवैयक्तिक संबंध (d) मानवीय मूल्य का नाश

J.P.S.C. 2021

उत्तर: (c), अनौपचारिक संबंध शहरी जीवन की विशेषता नहीं है। एसडीजी लक्ष्य 11 के तहत सतत् विकास को प्राप्त करने के लिये अनुशंसित तरीकों में से एक शहरी नियोजन को बढ़ावा देना है। मानवीय मूल्यों का ह्रास, प्रतिस्पर्धा, अवेयक्तिक संबंध सभी शहरी जीवन की विशेषता है। संबंधों की औपचारिकता, सामाजिक दूरी, अनुशासन, व्यक्तित्व का विभाजन सभी शहरी जीवन की विशेषता है।

6. ब्रिटिश प्रधानमंत्री विन्सट्न चर्चिल ने नोबल पुरस्कार जीता था।

(a) शांति के लिए
(b) भौतिक विज्ञान के लिए
(c) साहित्य के लिए
(d) अर्थशास्त्र के लिए

J.P.S.C. 2021

उत्तरः (c), 1953 में, विंस्टन चर्चिल ने साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीता था। दूसरे विश्व युद्ध (1940-45 और 1951-1955) के दौरान विंस्टन चर्चिल ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे। 1942 के वसंत में चर्चिल ने गाँधी जी और कांग्रेस के साथ समझौते का रास्ता निकालने के लिए अपने एक मंत्री सर स्टेप्फार्ड क्रिप्स को भारत भेजा। क्रिप्स के साथ वार्ता में कांग्रेस ने इस बात पर जोर दिया कि अगर धुरी शक्तियों से भारत की रक्षा के लिए ब्रिटिश शासन कांग्रेस का समर्थन चाहता है तो वायसराय को सबसे पहले अपनी कार्यकारी परिषद् में किसी भारतीय को एक रक्षा सदस्य के रूप में नियुक्त करना चाहिए। इसी बात पर वार्ता टूट गई।

7. हिन्दी के पश्चात कौन सी भारतीय भाषा विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है?

(a) तेलगु (b) तमिल
(c) बंगाली (d) मलयालम

J.P.S.C. 2021

उत्तरः (c), हिंदी के पश्चात् बंगाली वैसी भारतीय भाषा है जो विश्व में सर्वाधिक बोली जाती है। विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा मंदारिन ही है। यह विश्व मे सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन गयी हैं।

8. मौर्य साम्राज्य के पेशावर के निकट उत्तर-पश्चिम भाग में अशोक के शिलालेख थेः

(a) खरोष्ठी लिपि में (b) ब्राह्मी लिपि में
(c) आरमेइक लिपि में (d) देवनागरी लिपि में

J.P.S.C. 2021

उत्तरः (a), खरोष्ठी लिपि भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में प्रचलित यह लिपि दायें से बायें लिखी जाती थी। सम्राट अशोक के शहबाजगढ़ी और मानसेहरा (पाकिस्तान) स्थित अभिलेखों में खरोष्ठी लिपि का प्रमाण मिलता है। इसे विदेशी उद्गम लिपि यानी अरामाइक और सीरियाई लिपि से विकसित माना जाता है। कुल 37 वर्णों वाली इस लिपि में स्वरों का अभाव था, यहाँ तक कि मात्राएँ और संयुक्ताक्षर भी नहीं मिलते हैं। 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के संस्थापक जेम्स प्रिंसेप आधुनिक युग में पहली बार ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ने के लिये जाने जाते हैं।

9. चार्वाक् दार्शनिक प्रणाली

(a) वैशेषिक प्रणाली भी कहलाती थी
(b) लोकायत प्रणाली भी कहलाती थी।
(c) आस्तिक प्रणाली भी कहलाती थी।
(d) मीमांसा प्रणाली भी कहलाती थी।

J.P.S.C. 2021

उत्तरः (b), चार्वाक दर्शन का दूसरा नाम लोकायत दर्शन है यह भौतिकवादी दर्शन है अर्थात् भौतिक सुख को अधिक महत्व देता है। चार्वाक दर्शन धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य अथवा आत्मा का अस्तित्व स्वीकार नहीं करता है। चार्वाक भोगवाद को विशेषतः स्वीकार करते हैं। किन्तु इससे वे भोग में तत्पर और दुराचारी हैं, ऐसा निर्णय नहीं करना चाहिए। अहिंसा, शान्ति प्रियता, युद्ध विशेष, इत्यादि अनेक अंश उनके द्वारा भी प्रतिपादित हैं।

10. निम्नलिखित को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिएः

a. सातवाहन
b. वाकाटक
c. चालुक्य

निम्नलिखित में सही कूट का चयन कीजिएः

(a) a-b-c (b) b-c-a
(c) c-b-a (d) c-a-b

J.P.S.C. 2021

उत्तरः (a), सातवाहन वंश (60 ई. पू. से 240 ई.) भारत का प्राचीन राजवंश था, जिसने केन्द्रीय दक्षिण भारत पर शासन किया था। भारतीय इतिहास में यह राजवंश 'आन्ध्र वंश' के नाम से भी जाना जाता है। सातवाहन वंश का प्रारम्भिक राजा सिमुक था। इस वंश की स्थापना 255 ई. में विन्ध्य शक्ति ने की थी। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक राजा प्रवरसेन प्रथम था। अपने शासनकाल में उसने सम्राट की उपाधि की तथा चार अश्वमेघ यज्ञों का आयोजन किया। वाकाटक ब्राह्मण धर्म के पक्षधर थे। ये स्वयं भी ब्राह्मण थे और इन्होंने ब्राह्मणों को खूब भूमि-अनुदान दिये।

11. पूर्वी भारत में प्रमुख भारतीय-रोमन व्यापारिक स्थान था

(a) तामलुक (b) राजगीर
(c) अरिकमेडू (d) भाग्रपीर

J.P.S.C. 2021

उत्तरः (a), पूर्वी भारत में सबसे प्रमुख इंडो-रोमन ट्रेडिंग स्टेशन तामलुक था। तामलुक राज्य दक्षिण में बंगाल की खाड़ी, पूर्व में रूपनारायण नदी और पश्चिम में सुवर्णरेखा से घिरा हुआ था। प्राचीन भारत में, तामुल्क, जिसे ताम्रलिप्ता के नाम से भी जाना जाता है, 1940 में पुरातत्व विभाग द्वारा तामलुक के प्राचीन स्थल पर उत्खनन कार्य किया गया। अरिकमेडु पूर्वी समुद्र तट पर एक समृद्ध व्यापारिक बन्दरगाह-नगर था, जिसके चीन, मलाया और रोम के साथ घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध थे। यहाँ से भारतीय माल-मणियाँ, मोती, मलमल, सुगंधित पदार्थ, इत्र, मसाले और रेशम निर्यात किया जाता था।

12. कल्हण की "राजतरंगिनी" की तरह एक इतिहास की पुस्तक "गौडवाहो" लिखी थीः

(a) बिल्हरण द्वारा (b) संध्याकारनन्दिन द्वारा
(c) वाकपति द्वारा (d) बाणभटट द्वारा

J.P.S.C. 2021

उत्तरः (c), वाक्पतिराज द्वारा प्राकृत भाषा में रचित इस ग्रंथ से कन्नौज नरेश यशोवर्मा की विजय के विषय में जानकारी मिलती है। संध्याकर नंदी संस्कृत के कवि थे। उन्हें पाल वंश का सबसे महान कवि माना जाता है। वह अपने रामचरितम के लिए प्रसिद्ध हुए। बाणभट्ट सातवीं शताब्दी के संस्कृत गद्य लेखक और कवि थे उनकी प्रमुख दो रचनाएं हैं हर्ष चरितम और कादंबरी इनके अलावा इनकी 3 ग्रंथ और भी थे।

1. चंडी शतक
2. मुकुटताड़ीतक
3. पार्वती परिणय बाणभट्ट सम्राट हर्ज़वर्धनके दरबारी कवि थे।